विचार बिन्दु

सुंदर विचार जिनके साथ हैं। वे कभी एकांत में नहीं हैं। –सर पी. सिडनी

महत्वाकांक्षा के बजाय खुशी का मार्ग : राजस्थान का नया दृष्टिकोण

आधुनिकता की चकाचौंध भरी दौड़ में हम सब कहीं खोते चले जा रहे हैं। ऊँची इमारतें, तेज गाड़ियाँ, डिजिटल दुनिया की चमक–दमक और असीमित महत्वाकांक्षाएँ–ये सब कुछ ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन का पर्याय बन गया हो। लेकिन क्या वास्तव में यही जीवन का सार है? राजस्थान, जो सदियों से संस्कृति, परंपरा और आत्मिक गहराई का प्रतीक रहा है, आज इस प्रश्न के चौराहे पर खड़ा है। यहाँ की रेगिस्तानी हवाएँ, किले की दीवारें और लोकगीत हमें याद दिलाते हैं कि सच्चा सुख आधुनिकता की दौड़ में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और सामुदायिक बंधन में छिपा है। राजस्थान को अब आधुनिकता पर नहीं, हैप्पीनेस यानी सुख पर फोकस करना चाहिए। यह न केवल एक वैचारिक बदलाव है, बल्कि आवश्यकता भी, क्योंकि विकास की इस होड़ में हमारी सांस्कृतिक जड़ें सूख रही हैं और मानसिक स्वास्थ्य संकट गहरा रहा है।

कल्पना कीजिए एक ऐसे राजस्थान को जहाँ जोधपुर के मेहरानगढ़ किले के नीचे बच्चे साइकिल दौड़ाते हैं, न कि स्मार्टफोन पर स्क्रॉल करते। उदयपुर की झीलें पर्यटकों के लिए नहीं, स्थानीय लोगों के लिए सुख का स्रोत बनें। जयपुर की गलियों में हस्तशिल्प बनाने वाले कारीगर अपनी कला से संतुष्ट हों, न कि बाजार की मांग से दबे रहें। यह सपना दूर की कौड़ी नहीं लगता यदि हम आधुनिकता की परिभाषा बदल दें। विश्व स्तर पर भूटान का सकल सुखांक (Gross National Happiness) मॉडल इसी दिशा में एक प्रेरणा है। राजस्थान, जो पहले से ही अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से लैस है, इस मॉडल को अपनाकर न केवल आर्थिक विकास कर सकता है, बल्कि मानवीय सुख को भी प्राथमिकता दे सकता है। आधुनिकता का मतलब केवल कंक्रीट जंगल बनाना नहीं, बल्कि सतत और सुखपूर्ण जीवनशैली को अपनाना है।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पर्यटन, कृषि, खनन और हस्तशिल्प पर टिकी है। लेकिन आधुनिकता के नाम पर हो रहे अंधाधुंध विकास ने पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया है। उदाहरणस्वरूप, जैसलमेर की रेतीली भूमि पर सौर ऊर्जा संयंत्र बन रहे हैं, जो अच्छा है, लेकिन स्थानीय समुदायों का विस्थापन हो रहा है। सुख पर फोकस करने का मतलब है ऐसे विकास मॉडल जो पर्यावरण–अनुकूल हों और लोगों को केंद्र में रखें। ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर पैनल लगाने के साथ–साथ स्थानीय ऊर्जा सहकारी समितियाँ बनाना, जहाँ किसान अपनी फसलें उगाते हुए ऊर्जा भी बेच सकें। इससे न केवल आय बढ़ेगी, बल्कि आत्मनिर्भरता का सुख भी मिलेगा। जयपुर के आसपास के गाँवों में जैविक खेती को बढ़ावा देकर, जहाँ रासायनिक उर्वरकों के बजाय गोबर खाद का उपयोग हो, सुख का स्तर ऊँचा उठेगा। अध्ययनों से पता चलता है कि जैविक कृषि करने वाले किसानों में तनाव कम और संतुष्टि अधिक होती है।

शिक्षा क्षेत्र में भी परिवर्तन आवश्यक है। राजस्थान के सरकारी स्कूलों में आधुनिकता का मतलब स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल बोर्ड लगाना हो गया है, लेकिन शिक्षकों की कमी और छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उपेक्षित है। सुख–केंद्रित शिक्षा में योग, ध्यान और राजस्थानी लोककथाओं को शामिल किया जाए। उदाहरण के लिए, बीकानेर के स्कूलों में ऊँट उत्सव की कहानियाँ पढ़ाई जाएँ, जो बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़ें। विश्वविद्यालय स्तर पर कोटा जैसे शहरों में कोचिंग संस्कृति को बदलकर, जहाँ छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं के दबाव में टूट जाते हैं, वहाँ हैप्पीनेस प्रशिक्षण केंद्र खोले जाएँ। माइंडफुलनेस और करियर काउंसलिंग से छात्र न केवल सफल होंगे, बल्कि खुश भी रहेंगे। राजस्थान सरकार द्वारा शुरू की गई बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं को विस्तार देकर, लड़कियों के लिए सुख–आधारित कौशल प्रशिक्षण दें, जैसे हस्तशिल्प और डिजिटल मार्केटिंग का मिश्रण। इससे वे आर्थिक रूप से सशक्त होंगी और पारिवारिक सुख बढ़ेगा।

राजस्थान साबित कर सकता है कि आधुनिकता माध्यम है, लेकिन मुस्कराहट उद्देश्य है। यह यात्रा आसान नहीं, लेकिन संभव है। जब रेगिस्तान में एक पेड़ उग सकता है, तो सुखपूर्ण राजस्थान क्यों नहीं? आइए, महत्वाकांक्षा छोड़ें, खुशी अपनाएँ। राजस्थान फिर से विश्व को सिखाएगा। सच्चा विकास हृदय में होता है।

स्वास्थ्य सेवाएँ राजस्थान की सबसे बड़ी चुनौती हैं। ग्रामीण इलाकों में अस्पतालों की कमी और डॉक्टरों का अभाव आम है। आधुनिकता के नाम पर महँगे उपकरण खरीदने के बजाय, आयुर्वेद और योग को मुख्यधारा में लाया जाए। उदयपुर के आसपास के गाँवों में आयुर्वेदिक क्लिनिक स्थापित हों, जहाँ तुलसी–अदरक की चाय से लेकर पंचकर्मा तक सुलभ हो। सुख पर फोकस का मतलब है प्रिवेंटिव हेल्थकेयर। जोधपुर में चोलिया नृत्य और गैर गायन को स्वास्थ्य क्लबों में शामिल करें, जो व्यायाम के साथ–साथ सांस्कृतिक आनंद भी दें। महामारी के बाद मानसिक स्वास्थ्य संकट बढ़ा है; राजस्थान में प्रति लाख लोगों पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक हैं। हैप्पीनेस केंद्रों की स्थापना से, जहाँ काउंसलिंग के साथ ध्यान सत्र हों, यह कमी पूरी हो सकती है। इससे न केवल चिकित्सा व्यय कम होगा, बल्कि जीवन की गुणवत्ता बढ़ेगी।

पर्यटन राजस्थान की जीवनरेखा है, लेकिन आधुनिक होटलों की होड़ ने स्थानीय संस्कृति को प्रभावित किया है। सुख–केंद्रित पर्यटन में होमस्टे और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दें। उदाहरण के लिए, पुष्कर के ब्राह्मण गाँवों में पर्यटक ऊँट दूध निकालना सीखें, लोकगीत सुनें। इससे पर्यटकों को सच्चा सुख मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। आधुनिकता के बजाय इको–टूरिज्म पर जोर दें रेगिस्तानी सफारी में प्लास्टिक–मुक्त जोन बनाएँ। जयपुर के आमेर किले में सांस्कृतिक शामें आयोजित करें, जहाँ कठपुतली शो और मांडणा कला पर्यटकों को राजस्थानी सुख का अनुभव कराए। इससे रोजगार बढ़ेगा और सांस्कृतिक संरक्षण होगा। भविष्य में, राजस्थान सुख पर्यटन का हब बन सकता है, जहाँ विदेशी पर्यटक योग रिट्रीट के लिए आएँ।

सांस्कृतिक विरासत राजस्थान का सबसे बड़ा खजाना है। आधुनिकता ने इसे बाजारू बना दिया फोक डांस अब स्टेज शो हैं। हैप्पीनेस पर फोकस से इन्हें पुनर्जीवित करें। उदाहरणस्वरूप, उदयपुर के महल–हवेली में स्थानीय उत्सवों को जीवंत करें, जहाँ भागीदार सुख का अनुभव करें। साहित्य और कला को प्रोत्साहन दें मारवाड़ी लोककाव्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाएँ। युवाओं को राजस्थानी भाषा और संगीत सिखाएँ, ताकि वे अपनी जड़ों से जुड़कर सुखी हों। आर्ट एंड क्राफ्ट में, जोधपुर के बांधनी कारीगरों को डिजाइनर ब्रांड्स से जोड़ें, लेकिन उनकी कला को मूल रूप में रखें। इससे सृजनात्मक सुख मिलेगा।

सामाजिक संरचना में बदलाव लाना होगा। राजस्थान में बाल विवाह और दहेज जैसी कुरीतियाँ अब भी हैं। सुख–केंद्रित नीतियाँ इन्हें समाप्त करेंगी। महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों को मजबूत करें, जहाँ वे न केवल बुनाई करें, बल्कि नेतृत्व भी सीखें। युवाओं के लिए हैप्पीनेस युवा केंद्र बनाएँ, जहाँ खेल, संगीत और करियर मार्गदर्शन हो। बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रम न बनाएँ, बल्कि सामुदायिक हैप्पी होम, जहाँ कहानी सुनाने और चाय–पानी की परंपरा हो। इससे पारिवारिक बंधन मजबूत होंगे।

नीतिगत स्तर पर राजस्थान सरकार सकल सुखांक लागू करे। इसमें चार स्तंभ: सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरण संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य और सामुदायिक विकास। बजट का 10% सुख परिवर्तन के लिए आवंटित हो। उदाहरण के तौर पर, राजस्थान खुशी यात्रा योजना शुरू करें, जो गाँव–गाँव हैप्पीनेस सर्वेक्षण करे। इससे डेटा आधारित निर्णय होंगे। केंद्र सरकार के आजादी का अमृत महोत्सव को जोड़कर, राजस्थान सुख–स्वराज का मॉडल बने।

चुनौतियाँ हैं राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी, शहरीकरण का दबाव। लेकिन राजस्थान की जनता सांस्कृतिक रूप से मजबूत है। मीरा बाई की भक्ति, पन्नाधाय का बलिदान हमें सिखाते हैं कि सुख त्याग और समर्पण में है। युवा पीढ़ी को प्रेरित करें कि फेसबुक लाइक्स के बजाय लोक नृत्य में आनंद ढूँढें।

अंततः, राजस्थान साबित कर सकता है कि आधुनिकता माध्यम है, लेकिन मुस्कराहट उद्देश्य है। यह यात्रा आसान नहीं, लेकिन संभव है। जब रेगिस्तान में एक पेड़ उग सकता है, तो सुखपूर्ण राजस्थान क्यों नहीं? आइए, महत्वाकांक्षा छोड़ें, खुशी अपनाएँ। राजस्थान फिर से विश्व को सिखाएगा। सच्चा विकास हृदय में होता है।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

नारी शक्ति–सम्मान और मां की आराधना का पर्व नवरात्रि

डॉ. जे.के. गर्ग

नव और रात्र शब्दों से मिलकर बना है नवरात्रि। नव का अर्थ है नौ है वहीं रात्र शब्द में पुन: दो शब्द शामिल हैं रा का अर्थ है रात और त्रि का अर्थ है जीवन के तीन पहलू यानी–शरीर मन और आत्मा। नि:संदेह जीवन में हर एक को तीन प्रकार की मुश्किल समस्याओं का सामना करना ही पड़ता है– वों भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक होती है। रात्रि या रात मनुष्यों को दुख से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन में यश सुख–सुविधा खुशहाली लाती है। सच्चाई तो यही है आदमी को आराम सिर्फ रात्रि में ही मिलता है। रात की गोद में हम सभी अपने सारे सुख–दु:ख को भूल कर नींद का परम आनन्द लेते हैं।

शक्ति स्वरूप माता की आराधना के नवरात्रि के नो दिन माने गए हैं। जहाँ चैत्र नवरात्रि के दौरान कठिन साधना और कठिन व्रत का महत्व है वहीं दुसरी तरफ शारदीय नवरात्रि के नो दिन के दौरान सात्विक साधना, नृत्य, उत्सव आदि का आयोजन किया जाता है। चूंकि आश्विन मास में शरद ऋतु का प्रारंभ हो जाता है, इसलिए इसे शारदीय नवरात्रि कहा जाता है। वहीं शारदीय नवरात्रि सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने वाली मानी जाती है। नवरात्रि माँ के अलग–अलग रूपों को निहारने और उत्सव मनाने का पर्व है।

मान्यताओं अनुसार देवी दुर्गा ने अश्विन के महीने में महिषासुर पर आक्रमण कर उससे नौ दिनों तक युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया इसलिए इन नौ दिनों को शक्ति की आराधना के लिए समर्पित कर दिया गया है। कहा जाता है कि शारदीय नवरात्रि धर्म की अधर्म पर और सत्य की असत्य पर जीत का प्रतीक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है और धरती को उनका मायका कहा जाता है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि के अंत में राम नवमी आती है। इन 9 दिनों में पहले तीन दिन तमोगुणी प्रकृति की आराधना करते हैं, दूसरे तीन दिन रजोगुणी और आखिरी तीन दिन सतोगुणी प्रकृति की आराधना का महत्व है।

सच्चाई तो यही है आदमी को आराम सिर्फ रात्री में ही मिलता है। भारत में सदैव से नारी को देवी तुल्य मान कर सम्मान देने की गौरवमयी परंपरा चली आ रही है। नवरात्रि के पहले दिन शैलपुत्री माँ की पूजा की जाती है। उनकी आराधना करने से लोगो को एक किस्म की ऊर्जा मिलती है। इस ऊर्जा का उपयोग भक्त अपने मन की अशांति को दूर करने के लिए करते है। नवरात्रा की प्रथम देवी शैलपुत्री के जरिये हमारे ऋषि–मुनि जहाँ हम लोगों को पहाड़ों के प्राक्रतिक स्वरूप एवं पर्यावरण को सुरक्षित बनाये रखने का संदेश देते हैं। नवरात्रि के दूसरे दिन देवी दुर्गा के ब्रह्मचारिणी स्वरुप की आराधना की जाती है। इसका उद्देश्य है कि हम इस दुनिया में अपना लक्ष्य प्राप्त कर सके और अपनी पहचान बना सके। वहीं दुसरी तरफ देवी ब्रह्मचारिणी के माध्यम से हम सभी को जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करने के साथ–साथ नवीन ज्ञान प्राप्ति एवं नये–नये शोध कार्य करते रहने का संदेश देती है।

नवरात्रि के तीसरे दिन भक्त देवी दुर्गा के चंद्रघंटा स्वरूप की पूजा करते है। देवी चन्द्रघंटा हम सभी को नारी की सुन्दरता के साथ साथ चन्द्रमा से मिलने वाली शीतलता, शालीनता, सहनशीलता, सहजता, सकारात्मकता एवं शांति का बोध करवाती है। नवरात्रि के चौथे दिन लोग दुर्गा माँ के कूष्माण्डा स्वरूप की पूजा करते है। इनकी पूजा करने से हम उन्नति की राह पर चलते है और इनका आशीर्वाद हमारे सोचने–समझने की शक्ति को बेहतर तरीके से विकसित करता है। नवरात्रि के पांचवे दिन स्कंदमाता माता की पूजा की जाती है। उनको कार्तिकेय माता भी कहा गया है। इनके पूजा करने से भक्तों के अंदरूनी व्यवहारिक ज्ञान को विकसित करने के लिए उनका आशीर्वाद मिलता है। नवरात्रि के छठे दिन देवी दुर्गा के कात्यायनी स्वरूप की पूजा की जाती है। नवरात्रि के सातवें दिन पर देवी दुर्गा के कालरात्रि के स्वरूप की पूजा करते है। देवी कालरात्रि की पूजा करने से लोगो को अपने जीवन में यश, सम्मान और कीर्ति प्राप्त होता है। नवरात्रि के आठवें दिन देवी दुर्गा के महागौरी के स्वरूप की आराधना की जाती है। माँ महागौरी को सफेद रंग की देवी के रूप में पूजा जाता है। इनकी आराधना करने से मनुष्य की सारी मन की इच्छा पूरी हो जाती है। नवरात्रि के नौवे दिन देवी दुर्गा के सिद्धिदात्री स्वरूप की आराधना लोगों द्वारा की जाती है। इनकी पूजा करने से हमें ताकत मिलती है कि हम मुश्किल कार्य को सफलतापूर्वक कर सके। उन अधूरे कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करे।

नवदुर्गा के नो स्वरूप महिलाओं के पूरे जीवन चक्र का प्रतिबिम्ब ही है यानि शैलपुत्री जन्म ग्रहण करती हुई कन्या का स्वरूप है, 'ब्रह्मचारिणी' नारी का कौमार्य अवस्था प्राप्त होने तक का रूप है, वहीं नारी शादी से पूर्व तक चंद्रमा के समान निर्मल होने की वजह से 'चंद्रघंटा' के समान है। जब महिला शिशु को जन्म देने के लिये गर्भवती बनती है तो वह 'कूष्मांडा' का स्वरूप है, वहीं नारी शिशु को जन्म दे देती है तो वह 'स्कन्दमाता' बन जाती। संयम व साधना को धारण करने वाली नारी 'कात्यायनी' का स्वरूप हो जाती है। सती सावित्री के समान अपने संकल्प से पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से नारी 'कालरात्रि' जैसी बन जाती है। जीवन पर्यन्त अपने परिवार को संसार मानकर उसका उत्थान और उन्नयन करने वाली नारी 'महागौरी' हो जाती है और अंत में नारी अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करने के बाद धरती को छोड़कर स्वर्गारोहण करने से पहले संसार मे अपनी संतान को सिद्धि और सम्पदा का आशीर्वाद देने वाली 'सिद्धिदात्री' बन जाती है।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

माँ आशापुरा करती है भक्तों की आशा पूर्ण: पोकरण का चमत्कारी शक्तिपीठ

जुगल किशोर बिस्सा

पश्चिमी राजस्थान की भगवान परशुराम की तपोस्थली और परमाणु नगरी पोकरण में स्थित मां आशापुरा का प्राचीन मंदिर शक्ति, भक्ति, आस्था और आध्यात्मिक विश्वास का अद्भुत संगम माना जाता है। शहर के नवदुर्गा मंदिरों में प्रमुख स्थान रखने वाला यह शक्तिपीठ श्रद्धालुओं के लिए गहरी आस्था का केंद्र बना हुआ है। प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए पहुंचते हैं और मां के दरबार में श्रद्धापूर्वक माथा टेककर अपनी मनोकामनाएं व्यक्त करते हैं। भक्तों की अटूट मान्यता है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना को मां आशापुरा अवश्य स्वीकार करती हैं और अपने भक्तों की हर आशा को पूर्ण करती हैं। मंदिर में प्रज्वलित अखंड ज्योति को मां की दिव्य शक्ति का प्रतीक माना जाता है, जिससे भक्तों के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, आध्यात्मिक शक्ति और विश्वास का संचार होता है।

लोककथाओं के अनुसार मां आशापुरा के परम भक्त लुण भाणजी अत्यंत श्रद्धालु और तपस्वी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे प्रतिदिन रुदरवा से पवन वेग से गुजरात के कच्छ–भुज स्थित मां आशापुरा के मूल धाम में जाकर पूजा–अर्चना किया करते थे। वर्षों तक कठिन यात्रा कर उन्होंने मां की सेवा और भक्ति की। लेकिन बढ़ती उम्र के साथ यह लंबी यात्रा उनके लिए कठिन होने लगी। तब उन्होंने अत्यंत श्रद्धा और विश्वास के साथ मां से प्रार्थना की कि वे उनके साथ पोकरण चलकर यहीं विराजमान हो जाएं, ताकि वे जीवनभर मां की सेवा कर सकें। भक्त की अटूट श्रद्धा और भक्ति से प्रसन्न होकर मां आशापुरा ने उनका निमंत्रण स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने एक शर्त रखी कि यात्रा के दौरान यदि भक्त पीछे मुड़कर देखेगा तो वे उसी स्थान पर स्थिर हो जाएंगी और आगे नहीं बढ़ेंगी। भक्त लुण भाणजी ने यह शर्त स्वीकार कर मां के साथ पोकरण की ओर यात्रा प्रारंभ की। दंतकथा के अनुसार जब मां भक्त के साथ पोकरण की ओर आ रही थीं, तब शहर के पश्चिम–दक्षिण दिशा में स्थित गणगौर जंगल और पहाड़ियों के बीच से होकर यात्रा गुजर रही थी। उस समय आसपास पशु–पक्षियों और गायों की आवाजें गूंज रही थीं। इन आवाजों के कारण भक्त को मां के साथ चलने की आहट स्पष्ट सुनाई नहीं दी। धीरे–धीरे उनके मन में संदेह उत्पन्न हुआ कि मां वास्तव में साथ आ रही हैं या नहीं। संदेहवश उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और उसी क्षण मां आशापुरा उसी स्थान पर पृथ्वी में समा गईं। जिस स्थान पर यह दिव्य घटना हुई, वही स्थान आज मां दुपट्टा धाम के रूप में श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पवित्र तीर्थ माना जाता है। आज भी श्रद्धालु उस स्थान को गहरी आस्था और श्रद्धा के साथ नमन करते हैं।

इस दिव्य घटना के बाद भक्त लुण भाणजी बिस्सा ने उसी स्थान पर मां की आराधना प्रारंभ की। धीरे–धीरे इस स्थान की ख्याति दूर–दूर तक फैलने लगी। समय के साथ पोकरण के बिस्सा परिवार ने यहां मंदिर का निर्माण करवाया और विधिवत पूजा–अर्चना की परंपरा स्थापित की। मंदिर में प्रज्वलित अखंड ज्योति सदियों से निरंतर जल रही है, जिसे मां की कृपा और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। भाट बही के अनुसार माघ सुदी तीज, विक्रम संवत 1315 को मां आशापुरा का पोकरण में आगमन हुआ माना जाता है। तभी से इस शक्तिपीठ में नियमित पूजा–अर्चना और धार्मिक परंपराएं निरंतर चलती आ रही हैं।

नवरात्रि के पावन अवसर पर यहां आस्था का विशेष वातावरण देखने को मिलता है। इन दिनों प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु मां आशापुरा के दरबार में पहुंचते हैं और अपनी मनोकामनाएं मांगते हैं। भक्तों द्वारा भजन–कीर्तन, आरती और विशेष पूजा–अर्चना का आयोजन किया जाता है। पूरे मंदिर परिसर में धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण छा जाता है। मंदिर की व्यवस्था आज भी पोकरण के बिस्सा परिवार द्वारा श्रद्धा और समर्पण के साथ संभाली जा रही है। इस शक्तिपीठ में पोकरण ही नहीं बल्कि जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, फलोदी, रामदेवरा, महाराष्ट्र और गुजरात सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु बड़ी

संख्या में दर्शन के लिए पहुंचते हैं। अनेक श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने के बाद यहां आकर धन्यवाद स्वरूप विशेष पूजा–अर्चना भी करते हैं।

मां आशापुरा के इस पावन दरबार में आने वाले हर श्रद्धालु की आस्था है कि मां अपने भक्तों की हर आशा अवश्य पूर्ण करती हैं। इसी विश्वास और चमत्कारिक अनुभूतियों के कारण पोकरण का यह प्राचीन शक्तिपीठ आज पूरे क्षेत्र में आस्था, श्रद्धा और आध्यात्मिक विश्वास का प्रमुख केंद्र बन चुका है।

–जुगल किशोर बिस्सा,
प्रेस रिपोर्टर।

राजस्थान के विश्वविद्यालयों में पेंशन संकट : क्या सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान सुरक्षित है?

डॉ. पी. सी. कंठालिया

राजस्थान में उच्च शिक्षा के विस्तार और विकास के लिए पिछले कई दशकों में अनेक राज्य विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। इन संस्थानों ने न केवल शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा दी, बल्कि समाज में ज्ञान, वैज्ञानिक सोच और बौद्धिक चेतना का विस्तार भी किया। हजारों शिक्षक, वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारी इन विश्वविद्यालयों की वास्तविक शक्ति रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षित करने, शोध को आगे बढ़ाने और समाज के बौद्धिक विकास में समर्पित कर दिए। परंतु विडंबना यह है कि आज इन्हीं विश्वविद्यालयों के सेवानिवृत्त कर्मचारी अपनी पेंशन के लिए संघर्ष करने को मजबूर हैं। कई विश्वविद्यालयों में महीनों तक पेंशन का भुगतान नहीं हो पाता। यह केवल वित्तीय या प्रशासनिक समस्या नहीं है; यह उस व्यवस्था की संवेदनशीलता पर प्रश्नचिह्न है जो अपने ही कर्मियों को सम्मानजनक वृद्धावस्था देने में असफल दिखाई देती है।

किसी भी कर्मचारी के लिए पेंशन केवल आर्थिक सहायता नहीं होती, बल्कि उसके पूरे कार्यकाल की मान्यता और वृद्धावस्था की सुरक्षा का आधार होती है। जब कोई शिक्षक या कर्मचारी विश्वविद्यालय में सेवा प्रारंभ करता है, तो वह यह विश्वास लेकर काम करता है कि सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन उसके जीवन को स्थिरता प्रदान करेगी। लेकिन राजस्थान के कई विश्वविद्यालयों में यह विश्वास धीरे–धीरे टूटता दिखाई दे रहा है। उदाहरण के तौर पर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय में लगभग 1475 पेंशनरों को पिछले तीन महीनों से पेंशन का भुगतान नहीं हुआ है। राजस्थान के पाँचों कृषि विश्वविद्यालयों में भी स्थिति कम चिंताजनक नहीं है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में पेंशनरों की लगभग 22 महीनों की पेंशन बकाया बताई जाती है। उदयपुर स्थित कृषि विश्वविद्यालय की स्थिति तो और अधिक चिंताजनक है। वहाँ पेंशन भुगतान की व्यवस्था करने के लिए विश्वविद्यालय को अपनी भूमि तक बेचनी पड़ी। राजस्थान कृषि महाविद्यालय के प्रसिद्ध बागवानी फार्म का एक हिस्सा नगर विकास प्रन्यास को दिया गया। इस भूमि को वाणिज्यिक उपयोग में बदलकर प्लॉट बेचने की योजना बनाई गई, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिली। बाद में यह व्यवस्था की गई कि नगर विकास प्रन्यास विश्वविद्यालय को प्रति माह लगभग पाँच करोड़ रुपये देगा। इसके बावजूद पेंशन का नियमित भुगतान सुनिश्चित नहीं हो पाया।

विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि उनका पेंशन फंड लगभग समाप्त हो चुका है और आय के पर्याप्त स्रोत नहीं हैं, इसलिए वे राज्य सरकार से वित्तीय सहायता की मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर राज्य सरकार का तर्क है कि विश्वविद्यालय स्वायत्तशासी संस्थान हैं और उन्हें अपनी वित्तीय व्यवस्था स्वयं करनी चाहिए। यह तर्क सिद्धांत रूप में उचित प्रतीत हो सकता है, लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से यह यथार्थ से दूर है। विशेष रूप से कृषि विश्वविद्यालयों की आय के स्रोत अत्यंत सीमित हैं। पारंपरिक विश्वविद्यालयों की आय मुख्यत: परीक्षा शुल्क, शिक्षण शुल्क और संबद्धता शुल्क से होती है।

इसके विपरीत कृषि विश्वविद्यालयों में छात्र संख्या बहुत कम होती है। उदाहरण के लिए, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में लगभग 500 छात्र हैं, जबकि वहाँ 510 कर्मचारी और लगभग 1200 पेंशनर हैं। पेंशन का वार्षिक व्यय लगभग60 करोड़ रुपये है। ऐसी स्थिति में केवल शिक्षण शुल्क के आधार पर पेंशन भुगतान की व्यवस्था चलाना व्यावहारिक रूप से असंभव है।

दरअसल इस समस्या की जड़ें 1990 में लागू की गई पेंशन व्यवस्था में छिपी हैं। प्रारंभिक वर्षों में यह व्यवस्था इसलिए चलती रही क्योंकि उस समय पेंशनरों की संख्या कम थी। लेकिन समय के साथ सेवानिवृत्त कर्मचारियों की संख्या लगातार बढ़ती गई और महंगाई के साथ पेंशन राशि भी बढ़ती चली गई। परिणामस्वरूप आज अधिकांश विश्वविद्यालयों का पेंशन फंड लगभग समाप्त हो चुका है और पेंशन विनियम, 1990 व्यवहारिक रूप से अप्रासंगिक हो गए हैं। स्पष्ट है कि इस समस्या का समाधान केवल तात्कालिक आर्थिक सहायता से संभव नहीं है। इसके लिए दीर्घकालिक और ठोस नीति निर्णय आवश्यक हैं। इस समस्या का सबसे प्रभावी समाधान यह हो सकता है कि विश्वविद्यालय कर्मचारियों की राशि को राज्य सरकार के खाते में स्थानांतरित कर दिया जाए और पेंशन भुगतान की जिम्मेदारी सीधे राज्य कोष से वहन की जाए। इससे विश्वविद्यालयों पर वित्तीय दबाव कम होगा और पेंशनरों को नियमित भुगतान सुनिश्चित हो सकेगा। इसके साथ ही राज्य स्तर पर एक सुदृढ़ विश्वविद्यालय पेंशन फंड स्थापित किया जाना चाहिए, जिसमें सरकार और विश्वविद्यालय दोनों का योगदान हो। साथ ही विश्वविद्यालयों की आय बढ़ाने के लिए अनुसंधान परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना, संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करना और वित्तीय अनुशासन लागू करना भी आवश्यक है। पेंशन संकट का एक अत्यंत गंभीर मानवीय पक्ष भी है। अधिकांश पेंशनर जीवन के उस चरण में होते हैं जब स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ जाती हैं और चिकित्सा खर्च भी अधिक हो जाता है। पेंशन ही उनके लिए नियमित आय का मुख्य साधन होती है। जब महीनों तक पेंशन नहीं मिलती, तो उन्हें अपनी बचत खर्च करनी पड़ती है या परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर होना पड़ता है। कई मामलों में उन्हें कर्ज तक लेना पड़ता है।यह स्थिति उन लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक है जिन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा और समाज सेवा में लगा दिया।

आज राजस्थान के विश्वविद्यालयों के हजारों पेंशनर यही प्रश्न पूछ रहे हैं– क्या जीवन भर की निष्ठापूर्ण सेवा का प्रतिफल असुरक्षा और अनिश्चितता ही है? राज्य सरकार के सामने अब निर्णय का समय है। यदि समय रहते ठोस नीति नहीं बनाई गई, तो यह संकट केवल पेंशनरों की समस्या तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उच्च शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता को भी गंभीर रूप से प्रभावित करेगा। सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानजनक जीवन देना किसी भी सभ्य समाज का नैतिक कर्तव्य है–और इस कर्तव्य से मुंह मोड़ना न केवल अन्याय है, बल्कि भविष्य के शिक्षकों और कर्मचारियों के मन में भी गहरी असुरक्षा का भाव पैदा करेगा।

–डॉ. पी. सी. कंठालिया,
पूर्व प्रोफेसर एवं मुख्य मृदा वैज्ञानिक

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 20 मार्च, 2026

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, रेवती नक्षत्र रात्रि 2:38 तक, ब्रह्म योग रात्रि 10:15 तक, बालव करण दिन 3:42 तक, चन्द्रमा रात्रि 2:28 से मेष राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मीन, मंगल–कुम्भ, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:38 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग आज सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। बुध मार्गी रात्रि 1:02 पर होगा। सायन मेष में सूर्य प्रवेश रात्रि 8:16 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, दक्षिण श्रृंगोन्नति, सिंजारा (गणगौर), चेटीचण्ड, श्री झुलेलाल जयन्ती है। पंचक रात्रि 2:38 पर समाप्त होंगे। आज से सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश करेगा। आज बसंत संपात, महाविषुव दिन, जुमातुल विदा (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:05 तक, लाभ अमृत 8:05 से 11:05 तक, शुभ 12:34 से 2:04 तक, चर 5:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:35, सूर्यास्त 6:34

मेष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कर्क
धार्मिक–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में वाद–विवाद हो सकते हैं।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।